प्राक्कथन

साहित्यकार अपने युग का प्रतिनिधि होता है। वह अपने युग की आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों से प्रभावित रहता है, अतः उसकी कृतियों में युगीन परिस्थितियों की स्पष्ट छाप रहती है।

कमलेश्वर स्वातंत्र्योत्तर काल के प्रतिष्ठाप्राप्त एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी कलाकार है। उनके साहित्यिक अवदान को पीढियों तक भुलाया नहीं जा सकेगा। अपनी लेखनी से कमलेश्वरजी ने गद्य साहित्य के सभी विधाओं को संपन्न किया है। आम आदमी ही हमेशा उनका विषय रहा । वे समाज में कुलीन वर्ग को टटोलते हैं, साधनहीनता के बीच जीते हैं। संस्कृति से संस्कारों का आबंटन करते हैं और धर्म से जीवनशैली को रूपायित करते है।

रचनाशीलता की अभिक्षमता वैयक्तिक भिन्नता पर निर्भर करती है। व्यक्ति का मानसिक संस्कार, उसकी विशिष्ट प्रवृत्ति, अवधान की तीव्रता, परिपक्वता, सामाजिकता का बोध, अंतस्थल का अनुशासन एवं अभिव्यक्ति का कौशल आदि उसे सर्जक बनाते है। जब हम कमलेश्वर को केंद्र में रखकर उनके चारों ओर सर्जनात्मकता का वृत्त खींचना चाहें तो परिधि में स्वच्छंदतावादिता, शास्त्रीय परिपाटी, व्यवहारिकता, प्रामाणिकता, यथार्थता इत्यादि की गहरी लकीरें देखने को मिलती हैं।

कमलेश्वर सच्चे कलाकार की भाँति कल्पनाप्रियता के वशीभूत होते हुए प्रतीकात्मकता, आदर्शवादिता एवं मानव वादिता को प्रकट करते- करते मनुष्य तथा मनुष्य से

इतर प्रकृति का समन्वय प्रस्तुत करते हैं, जिससे अनेक बिम्ब रेखांकित होते हैं जो आगे चलकर रचनाओं को अलंकृत करते हैं।

छात्रावस्था से ही कलमेश्वर की कहानियों के प्रति मेरा विशेष आकर्षण रहा था। समकालीन समस्याओं से अनुप्राणित उनके उपन्यास और कहानियों को बार- बार पढ़ने का अवसर मुझे मिला था। उनके कथा साहित्य के प्रति इस विशेष आकर्षण से प्रेरित होकर ही मैंने अपने शोध- विषय के रूप में कमलेश्वर के कथा - साहित्य को चुना था। मेरे शोध प्रबन्ध का शीर्षक है 'कमलेश्वर के कथा साहित्य में जीवन मूल्य।' कमलेश्वर के कथा साहित्य के विविध पहलुओं का सम्यक विश्लेषण ही इसमें किया गया है। यह प्रबन्ध चार अध्यायों में विभक्त है। अंत में उपसंहार है तथा एक विस्तृत संदर्भ ग्रंथ सूची भी प्रस्तुत है।

अध्याय : एक है - कमलेश्वर और उनका कथा साहित्य। इसमें कमलेश्वर के व्यक्तित्व तथा कृतित्व की झाँकी प्रस्तुत की गई है।

अध्याय : दो - में जीवन मूल्यों का वर्गीकरण, मूल्य परिवर्तन की स्थिति, स्वरूप आदि का विवेचन प्रस्तुत किया है।

अध्याय : तीन - में कमलेश्वर के कथा साहित्य में प्रतिफलित जीवन मूल्यों का विस्तत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय : चार - में कमलेश्वर के कथा शिल्प का विवेचन किया गया है।

उपसंहार में निष्कर्ष के तौर पर कमलेश्वर के कथा - साहित्य का मूल्यांकन प्रस्तुत है। हर अध्याय के अंत में अपना निष्कर्ष जोड़कर मैंने अपने शोध प्रबन्ध को मौलिक बनाने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध मार इवानियोस कॉलेज के हिन्दी विभाग के रीड़र (सेवानिवृत्त) डॉ. सी. एम. योहन्नान के समर्थ निर्देशन में पूर्ण हुआ है। उनके अमूल्य सुझावों केलिए मैं हृदय से आभारी हूँ।

मेरे स्वर्गीय पिताजी के आशीर्वादों के कारण ही मेरा यह शोध कार्य सम्पन्न हो सका है। उनके प्रति में श्रद्धाजंलि अर्पित करती हूँ।

मैं अपने पतिदेव सुरेष बाबुजी के प्रति सहज आभार प्रकट करती हूँ। वे इस शोधकार्य के आरम्भ से अन्त तक मुझे प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देते रहे हैं। मैं अपनी माँ, जानकी, जगन और हितौषी मित्रों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिनकी प्रेरणा एवं सहायता से ही मैं यह कार्य सम्पन्न कर सकी हूँ।

सरकारी वनिता कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्षा एवं आचार्या आदरणीया डॉ. सी.जे प्रसन्नाकुमारी, केरल विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग की अध्यक्षा डॉ. जे उमाकुमारी जी औऱ अन्य गुरुजनों के प्रति भी मेरा आभार निस्सीम है, जिनके सुझाव, अनुग्रह तथा प्रोत्साहन इस शोध कार्य को पूर्ण रूप देने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

इस शोध प्रबंध की तैयारी में लायब्रेरियन श्रीमती षीबा जी और केरल विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय के कार्यकर्ताओं और केरल हिन्दी प्रचार सभा के पुस्तकालय के कार्यकर्ताओं से भी मैं आभरी हूँ।

इस अवसर पर कलाजी, षीबाजी, सीमाजी, बिन्दुजी, प्रमीलाजी, इन्दुजी और अन्य मित्रों के प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। विशेषतः मायाजी, जिन्होंने मेरे लिए इस शोध- प्रबंध तैयार करने में बहुत सहायता दी है, उनको भी मैं इस अवसर पर स्मरण करती हूँ।

इस प्रबंध का टंकण कार्य करनेवाले मधुरिमा सोफटेक के प्रति विशेष आभारी हूँ।

इस शोध प्रबंध के द्वारा कमलेश्वर के कथा- साहित्य का विशेष अध्ययन करके हिन्दी कथा साहित्य जगत में उनके योगदान को रेखंकित करने का सविनय प्रयास ही हुआ है। कमलेश्वर के कथा साहित्य के पाठकों व अध्येताओं के लिए यह लाभदायक सिद्ध होगा। इस आशा के साथ मेरा यह शोध प्रबन्ध सादर समर्पित है।

तिरुवनन्तपुरम

विनीता

श्रीदेवी एस.